शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.: DELBIL/2010/31292

An Internationally Indexed Refereed Research Journal & A complete Periodical dedicated to Humanities & Social Science Research
मानविकी एवं समाज विज्ञान के मौलिक एवं अंतरानुशासनात्मक शोध पर केन्द्रित

Half Yearly

Vol-4, Issue-1
15 Jan-2013

शोध छात्र, मनोविज्ञान, महात्मागाँधी अन्तरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र

www.shodh.net

Web Portal of Humanity & Social Science Research

नागपुर भूकंप आपदा प्रबंधनः पुनर्वसन और विकास का अध्ययन

- शैलेन्द्र कुमार वर्मा

भूकंप आपदा प्रबन्धन की प्रमुख चुनौती है। नागपुर भूकंप से व्यापक जन-धन की क्षति हुई थी। सरकारी और गैर सरकारी स्तर पर पुनर्वास के अथक प्रयास किये गये। प्रस्तुत शोध अध्ययन नागपुर क्षेत्र के किल्लारी भूकंप के उपरांत पुनर्वास से संबंधित तथ्यों का संकलन एवं सम्यक् विश्लेषण है।

विषय संकेतः- भूकंप, पुनर्वास, किल्लारी भूकंप

किसी भी देश की आर्थिक स्थिति, तकनीक, राजनीति कितनी भी विकसित हो या अविकसित, वह प्राकृतिक आपदाओं का रोक नही सकती। इसका एक उदाहरण 30 सितंबर 1993 में महाराष्ट्र के लातुर, एकोंठी, किल्लारी आदि सोलह-सत्रह गावों के समूह में आया एक भयानक भूकंप है। जिसका केंद्र बिन्दु किल्लारी होने के कारण उसे किल्लारी भूकंप के नाम से जाना जाता है। हालाँकि हमारी शक्ति या कुशलता प्राकृतिक आपदाओं को रोकने में अपर्याप्त होती हैं, परंतु प्राकृतिक आपदा के बाद इसके पुनर्वसन में हमारी शक्ति की वास्तविक परीक्षा होती है और इसी प्रकार की परीक्षा किल्लारी भूकंप में हुई। भूकंप के बाद भयानक जान माल की हानि हुई। दुनिया भर से इसके लिए आर्थिक सहायता दी गई थी, इसके उपयोग और दुरुपयोग के बारे बहुत अफवाहें फैली। यह शोध अध्ययन इन्ही स्थितियों को निर्दशन, अनुसूची, साक्षात्कार इत्यादि शोध प्रविधि एवं तकनीकों के माध्यम से जाँचने का प्रयत्न है।

भूकंप, सुनामी, सूखा इत्यादि सभी घटनाएँ प्राकृतिक आपदा के रूप में जानी जाती हैं। इनके परिणाम अत्यंत गंभीर होते हैं। भूकंप को विभिन्न भूगर्भशास्त्रीयों द्वारा विभिन्न प्रकार की परिभाषित किया गया है।

सभी परिभाषाएँ सामान्यतः इसे जमीन में होने वाले हलचल एवं थरथराहट के रूप में परिभाषित करती हैं। भूकंप का मापन Richter scale से किया जाता है, जिसका नाम Richter (Seismologist) के नाम पर दिया गया है। अलग-अलग माप के आधार पर भूकंप की तीव्रता की श्रेणियाँ बनाई गई हैं। जैसे 4.9 से उपर हलका (slight), 5.06 से 6.9 मध्यम (medium), 7.07 से 7.9 विनाशकारी (great) , 8 से उपर अतिविनाशकारी (very great)।

किल्लारी भूकम्प :

किल्लारी भूकम्प मध्यम स्तर की तीव्रता का भूकम्प था। यह 30 सितंबर 1993 को आया था। किल्लारी भूकंप दुनिया भर में दो कारणों से प्रसिद्ध है। प्रथम- इस भूकम्प के बाद उन लोगों का पुनर्वसन दूसरी जगहों पर किया। मानो पूरा गाँव ही दूसरी जगह बसाया है। इस भूकम्प के बाद दुनियाभर से आर्थिक सहायता ली गयी थी, जिसके उपयोग एवं दुरूपयोग के बारे में बहुत अफवाएँ हैं। इन सभी बातों के बीच वहाँ के ग्राम वासियों की विभिन्न स्थिति एवं प्रशासकीय और स्वयंसेवी संस्था द्वारा दी गयी सहायता का तथा किस प्रकार उन लोगों ने अपने जीवन को उस परिस्थिति से उबारने के लिए प्रयास किया गया है। को इस शोध के माध्यम से मूल्यांकित करने का प्रयास है।

संक्षेप में किल्लारी भूकंप के स्वरूप, भूकंप से हुई हानि एवं प्रभावित क्षेत्र लातुर एवं उस्मानाबाद के खर्च विवरण अगले पृष्ठ पर अंकित है।

क्र	नाम	किल्लारी भुकंप	भूकंप हानि

शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.: DELBIL/2010/31292

An Internationally Indexed Refereed Research Journal & A complete Periodical dedicated to Humanities & Social Science Research
मानविकी एवं समाज विज्ञान के मौलिक एवं अंतरानुशासनात्मक शोध पर केन्द्रित

Half Yearly

Vol-4, Issue-1
15 Jan-2013

www.shodh.net

Web Portal of Humanity & Social Science Research

1	उगमस्थान (समय IST)	घ. मि. से. 03 55 47.5	1. भूकंप के पश्चात् भौगालिक हानि- -केन्द्र बिंदु के पास जमीन फट गयी। -तलनी गाँव की २ कि.मी. की दूरी -तक ३ फिट उपर उठ गयी थी। -पानी की मात्रा पर बड़े तौर पर प्रभाव -माकणी डैम के नजदीक भूमि फट गयी 2. मिझोसेस्मल भाग : 110 स्क्वेअर से.मी. 3. भूकंप का क्षेत्र : केन्द्र से 700 कि.मी. 4. मृत व्यक्तियों की संख्या : 8089 5. जख्मी व्यक्ति : 16000 6. पूर्णध्वस्त गाँव : 67 7. अंशतः टूटे फुटे घरों की संख्या : 2568 8. पूर्णत क्षतिग्रस्त घरों की संख्या : 18797 9. अंशत क्षतिग्रस्त घरों की संख्या : 2,17,319
2	केन्द्रबिंदु	180.07'' उ.760.62''पु.	
3	गहराई	12.0(3.0) कि.मी.	
4	**प्रवेग**	45%ह गुरूत्व	
5	**तीव्रता**	IX on MSK मापानुसार VIII on MMI मापानुसार	
6	**फॉल्ट प्लेन**	थ्रस्ट फॉल्ट स्ट्राईक 299,	
7	**पूर्व झटका**	Taxis % PLG 86, AZM. 188 Paxis % PLG 4, AZM. 31 (भारतीय मौसम विभाग द्वारा) (18 अक्टूबर 1992, 4.8 (मेरि अनुसार)	

– **लातुर गॅजेटियर पृष्ठ क्र. ३३** |

– Tata institute of Social Science **के सर्वे के अनुसार**

क	लातुर - उस्मानाबाद खर्च विवरण	**(रू. करोड़ में)**
१	**घर बनाने हेतु खर्च**	529.6
२	52600 **घरों के लिए स्थनांतरित गावों में के** 17500 **घर क्वदंसक संस्थाओं के** 5500 **घर पूराने गावों में के** 29600 **घर**	32.00+126.2+43.7 +159.1
३	**मजबुतिकरण एवं दुरूस्ती**	3.2
४	**पथदर्ज़ी मजबूतिकरण प्रकल्प**	5.0
५	**मूलभूत सेवाएं (रास्ते,पुल,विद्यालय, इमरजेन्सीरोड, स्मारक, सार्वजनिक स्थल, नागरिक सुविधाएँ)**	239.6
६	**आर्थिक पुनर्वसन सामाजिक पुनर्वसन**	16.8+28.3
७	**यांत्रिक सहायता, उपकरण, प्रशिक्षण**	77.2
८	**आकस्मिक खर्च**	23.10

शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.: DELBIL/2010/31292

An Internationally Indexed Refereed Research Journal & A complete Periodical dedicated to Humanities & Social Science Research
मानविकी एवं समाज विज्ञान के मौलिक एवं अंतरानुशासनात्मक शोध पर केन्द्रित

Half Yearly

Vol-4, Issue-1
15 Jan-2013

www.shodh.net

Web Portal of Humanity & Social Science Research

९	अभिकल्प व निरिक्षण	55.05
१०	दरवाढ (गृहित)	75.05
	योग	1044.2

भूकंप के तुरंत बाद प्रादेशिक संगठनों के स्वयंसेवकों ने सहयोग कार्य शुरू किया था, जिसमें मानवलोक, अंबेजोगाई, मानवी हक्क अभियान, माजलगाँव, स्वप्नभुमी, केरवाडी, ग्रामीण विकास शिक्षण संस्था, लातुर आदि जैसे संगठन सामने आए।

अध्ययन क्षेत्र का चयन एवं शोध प्रविधि:-

प्रस्तुत शोध भारत के महाराष्ट्र राजधानी मुंबई की सहायक राजधानी नागपुर में किया गया। इसका निर्माण 1 मई, 1960 में मराठी भाषी लोगों के माँग पर की गई थी। भूकंप में पूरी तरह से पुनर्वसित गाँव की संख्या 20 थी। इसमें हमने अध्ययन के लिए प्रभावित क्षेत्रों के चार गाँवों का और प्रत्येक गाँव के 25-25 परिवार का चयन किया। इस प्रकार कुल 100 परिवारों का चयन उद्देश्य पूर्ण निदर्शन पद्धति द्वारा किया गया। प्रस्तुत शोध में निम्नलिखित शोध प्रविधि एवं तकनीक का प्रयोग किया गया-

अधययन में प्रयुक्त प्रविधियां

- **प्राथमिक श्रोत**
  - **निदर्शन**
    - **-उद्देश्यपूर्ण निदर्शन**
    - **-१०० परिवारों का चयन**
  - **त्रिभुजन पद्धति**
    - **संख्यात्मक या गणनात्मक पद्धति**
      - **- अनुसूची**
      - **- अद्धसहभागी अवलोकन**
      - **- साक्षात्कार**
    - **- गुणात्मक पद्धति**
      - **- व्यैक्तिक अध्ययन**
      - **- केंद्रिय समूह वार्ता**
- **द्वितीयक श्रोत**
  - **- भूकंप पुर्नवसन से प्राप्त आँकड़े**
  - **- जिला गंजेटियर**

शोध संचयन SHODH SANCHAYAN

शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.: DELBIL/2010/31292

An Internationally Indexed Refereed Research Journal & A complete Periodical dedicated to Humanities & Social Science Research
मानविकी एवं समाज विज्ञान के मौलिक एवं अंतरानुशासनात्मक शोध पर केन्द्रित

Half Yearly

Vol-4, Issue-1
15 Jan-2013

www.shodh.net

Web Portal of Humanity & Social Science Research

परिणाम :-

वर्तमान शोध में प्राप्त परिणाम को किल्लारी भूकंप में पुनर्वर्सित गाँव के लोगों के आर्थिक पुनर्वसन के पक्षों को सविस्तार एवं सामाजिक-सांस्कृतिक, राजनैतिक, शैक्षणिक पक्षों को संक्षिप्त में प्राप्त आँकड़ों के माध्यम से दर्शाया जा रहा है-

1. ग्रामीणों की सामाजिक-शैक्षणिक स्थिति:-

ग्रामीणों के आर्थिक पुनर्वसन के मूल्यांकन के पूर्व प्रारम्भिक जानकारी के रूप में गामीणों के पारिवारिक जानकारी, शैक्षणिक स्थिति, निवासीय एवं जातीय स्थिति को दर्शाना आवश्यक है। जिसके संबंध में प्रमुख परिणाम निम्नलिखित है:-

क्र	आधार		आवृति	प्रतिशत
1	सदस्यों के अनुसार परिवार संख्या	4 व्यक्तिवाले परिवार	27	27
		5 व्यक्तिवाले परिवार	24	24
		6 व्यक्तिवाले परिवार	16	16
		7 व्यक्तिवाले परिवार	9	9
		8 व्यक्तिवाले परिवार	9	9
		अन्य	15	15
2	शैक्षणिक स्थिति कुल 524 सदस्य में	निरक्षर	94	17-93
		प्राथमिक एवं माधयमिक कक्षा तक	327	62-40
		उच्चज़िक्षा	56	10-68
3	जतीय स्थिति	मराठा	34	34
		लिंगायत	26	26
उ		अन्य	40	40
4	मकान	कच्चा	8	8
		पक्का	92	92

उ

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि निदर्शन के रूप में लिए 100 परिवारों में क्रमश: 27 प्रतिशत व 29 प्रतिशत परिवार 4 से 5 सदस्यीय क्रमश: 108 व 120 सदस्य वाले परिवारों से है, जबकि 16 प्रतिशत परिवार 6 व्यक्ति 96 सदस्य व क्रमश: 9-9 प्रतिशत 7-8 परिवार 63-72 सदस्य वाले परिवार मिले प्राप्त परिणाम प्राप्त परिवार नियोजन के अभाव तथा पुनर्वसन के समय एन जी ओ की निष्क्रियता को दर्शाता है। जबकि ग्रामीणों की शैक्षणिक स्थिति का अध्ययन करने पर 18 पतिशत ग्रामीण निरक्षर एवं 64.4 प्रतिशत ग्रामीण प्राथमिक से माध्यमिक कक्षा तक शिक्षित जबकि पुनर्वसन के समय भारत माता गृह निर्माण के माध्यम से रात्रिशाला आदि योजनाओं के द्वारा बच्चों को शिक्षित करने का कार्य किया गया था, फिर भी 18 प्रतिशत निरक्षरता है। इसो क्रम में समान्य जानकारी के रूप में ग्रामीणों के जातीय स्थिति का अध्ययन करने पर 34 प्रतिशत मराठा और 26 प्रतिशत लिंगायत जाति के लोग मिले जबकि 40 प्रतिशत अन्य जातियों के थे। अत: पुनर्वसन में मुख्य जातियों का वर्चस्व बना हुआ है, जैसे पुनर्वसन के पहले था। सकारात्मक परिणाम के रूप में 92 प्रतिशत मकान पुनर्वसन के बाद पक्के एवं 8 प्रतिशत कच्चे मिले जिसका कारण प्रशासन द्वारा शोध पत्रिका आदि के रूप में मापदंडो को बार-बार बदलने के कारण है।

२. ग्रामीणों की आर्थिक स्थिति संबंधित परिणाम:-

किसी भी प्राकृतिक आपदा के बाद आर्थिक आयामों का पुनर्वसन सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण हो जाता है, इसके अंतर्गत निम्न आयामों का अध्ययन किया गया-

शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.: DELBIL/2010/31292

An Internationally Indexed Refereed Research Journal & A complete Periodical dedicated to Humanities & Social Science Research
मानविकी एवं समाज विज्ञान के मौलिक एवं अंतरानुशासनात्मक शोध पर केन्द्रित

Half Yearly

Vol-4, Issue-1
15 Jan-2013

www.shodh.net

Web Portal of Humanity & Social Science Research

क्र	पेशा	आवृति	प्रतिशत	जमीन संबंधी जानकारी (एकड में)	आवृति	प्रतिशत	वार्षिक आय	आवृति	प्रतिशत
1	कृषि	84	16.03	20	2	2	10-20 हजार	35	35
2	व्यवसाय	34	6.4	11-20	12	12	20-40 हजार	32	32
3	अध्ययन	98	18.70	6-10	13	13	40-60 हजार	14	14
4	मजदूरी	62	11.83	2.5-5	21	21	60-1 लाख	3	3
5	बेरोजगार महिला	239	45.61	1-2.5	21	21	1 लाख से आगे	16	16
6	नौकरी	7	1.33	भूमिहीन	31	31	-	-	-
	योग	524 सदस्य	100	याग	100	100	योग	100	100

उपरोक्त तालिका में ग्रामीणों के वर्तमान पेशे, जमीन संबंधी विवरण एवं वार्षिक आय को दर्शाया गया है। ग्रामीणों के पेशे के संदर्भ में परिणाम प्राप्त हुआ कि पुनर्वसन के समय में स्वयंसेवी संस्थाओं ने महिलाओं के आर्थिक विकास हतु महाराष्ट्र अधोजकता विकास महामंडल एवं इंडिया वुमेंश कार्पोरेशन मुंबई ने सिलाई मशीन दिया। इतना ही नहीं 17 अगस्त, 1995 में आरोग्य सेवा मंडल अंतर्गत सिप्सल में जुर्राबे बनाना शुरु किया जो अमेरिका तक निर्यात कर रहे थे। लेकिन आज व्यवस्था बिल्कुल बदल चुकी ह। सौ परिवारों में 230 (लगभग 46 प्रतिशत) महिला बेरोजगार है। साथ ही प्रकल्प ग्रस्त एवं भूकंप ग्रस्त को नौकरी में सहुलियत देने का वादा राजकीय नेताओं एवं प्रशासन ने किया था। लेकिन 1.3 प्रतिशत लोगों को ही नौकरी मिली यह सत्य है कि अभी भी 16 प्रतिशत लोग कृषि पर आधारित है। जिनमें कमी आ रही है इसका मूल कारण उनका अपने खेतों से काफी दूर पुनर्वास का होना है। ऐसी परिस्थिति में लोग प्रस्थापित होकर गाँवों से शहर की ओर भाग रहे हैं।

वहीं जमीन संबंधी जानकारी से पता चला है कि भूकंप पुनर्वसन के बाद कृषि से गाँव और ग्रामीणों दोनों की दूरी बढ़ रही है तथा साथ पुनर्वसन में प्रशासन ने जान-बूझ कर गरीबों की जमीन लेकर प्रस्थापितों के सम्मान को बनाए रखने की कोशिश की है जिस कारण से 11 से 20 और उसके आगे भी जमींदारों की जमीन यथावत बनी है। वही सहायक रूप में किए गए अध्ययन में केवल 30 प्रतिशत परिवार के पास सिंचित जमीन है जो भी कृषि से दूर होने का प्रभावी कारण है।

3. ग्रामीणों में पुनर्वसन के बाद बदलाव की समीक्षाः-

ग्रामीणों को पुनर्वसन के समय अनेक प्रकार की सहायता दी गई परंतु उचित निरीक्षण व कमियों के कारण 17 साल बाद वहाँ परिस्थिति बदल गई जिसका उदाहरण ग्रामीणों में पुनर्वसन के समय पशुधन घटने के परिणाम को देखा जा सकता है-

शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.: DELBIL/2010/31292

An Internationally Indexed Refereed Research Journal & A complete Periodical dedicated to Humanities & Social Science Research
मानविकी एवं समाज विज्ञान के मौलिक एवं अंतरानुशासनात्मक शोध पर केन्द्रित

Half Yearly

Vol-4, Issue-1
15 Jan-2013

www.shodh.net

Web Portal of Humanity & Social Science Research

क्र	पशु	पुर्नवसन के समय पशु आबंटन		17 साल बाद सौ परिवारों में पशु संख्या	परिवार संख्या
		लाभार्थी	प्राणी संख्या		
1	गाय	563	599	29	100
2	भैस	634	832	34	100
3	बकरी	863	3740	31	100
4	भेड़	33	270	2	100
5	गधो	3	4	0	100
	योग	1996	5445	96	

उपरोक्त प्रकार से 32 गाँवों में पशु बाटे जा चुके थे। 17 साल बाद वर्तमान में सर्वेक्षण करने पर 100 परिवार में उपरोक्त स्थिति दिखाई दी जो दर्शाती है कि पर्याप्त चारागाह की कमी के कारण पशुओं की संख्या निरंतर कम हो रही है क्योंकि पुनर्वसन के बाद आस पास के चारागाह संबंधी जमीन निजी है जिसमें चरागाह अनुमति नहीं मिलती ।

वही समीक्षा के रूप में भूकंप में मृत व्यक्ति संबंधित मुआवजा का अध्ययन करने पर अध्ययन में चयनित 100 परिवार के 24 व्यक्ति भूकंप में मारे गए थे जिनमे 5 परिवार को अभी भी मुवावजा नहीं मिला। संभवत: इसका कारण प्रशासन के वक्त बेवक्त बदलते निर्णय हैं। इसी प्रकार की स्थिति घरों के आवंटन में भी मिली जहाँ अध्ययन समूह के 100 परिवारों में से 12 परिवार को अभी भी घर नहीं मिला है।

निष्कर्ष एवं उपसंहार :-

निष्कर्षत: कहा जा सकता है कि इस भयानक भूकंप के बाद काली मिट्टी लिनियामेंटस के कारण 52 गाँवो का पुनर्स्थापन 5-6 किमी की दूरी पर किया गया, जबकि इस प्रकार के निर्णय कभी जापान जैसे भूकंप प्रभावी देश में नहीं लिया गया है सामान्यत: इसका कारण लोगों का डर व भावनात्मक पक्ष था । परंतु विस्थापन उन विस्थापित ग्रामीणों के लिए नकारात्मक ही रहा जैसे :-

1. खेत एवं गाँवों के मध्य दूरी होने कारण लोगों का कृषि एवं कृषि मजदूरी के प्रति उत्साह कम हो गया। इसका प्रभाव 60 प्रतिशत लोगों को हुआ। साथ ही लोग शहर की ओर पलायन करने लगे ।
2. महत्त्वपूर्ण आर्थिकी स्रोत के रूप में पशुओं का आवंटन किया गया था जो पर्याप्त चरागाह की कमी के कारण सतत् घटता रहा।
3. रहने एवं गोदाम क लिए लोगों को जगह कम मिली रिर्पोट के अनुसार 39 प्रतिशत लोग जो 250 फीट चौड़ी मकानों मे रहते थे उनका प्रतिशत घट कर 50 प्रतिशत हो गया इस प्रकार ग्राम रचना की समस्या सामने आयी।
4. ग्रामीण नेतृत्व में कोई परिवर्तन नहीं आया। जो जातिगत थी वह जातिगत रह गई।
5. उचित नियंत्रण व निरीक्षण के अभाव में दिए गए प्रशिक्षण व सहयोग समाप्त हो गये। लोगों में मानसिक विकलांगता व परावलंगता आ गयी।

शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.: DELBIL/2010/31292

An Internationally Indexed Refereed Research Journal & A complete Periodical dedicated to Humanities & Social Science Research
मानविकी एवं समाज विज्ञान के मौलिक एवं अंतरानुशासनात्मक शोध पर केन्द्रित

Half Yearly

Vol-4, Issue-1
15 Jan-2013

6. एक सकारात्मक कार्य यह हुआ कि भूकंप के बाद प्रशासन ने सतर्क होकर District control room बनाया व आपदा प्रबंधन के लिए V.H.F (Very High Frenquency) नेटवर्क प्रतिस्थापित किया।

निष्कर्षत : पुनर्वास सच्चे अर्थों में पुनर्वास न होकर नये स्वरूप में घटित नई कृषक कालोनी की तरह हो गया। जिसकी अपनी समस्याएँ एवं चुनौतियाँ थीं।

संदर्भ सूची

1. आपातकालीन व्यवस्थापन कार्यक्रम, जिला आपदा व्यवस्थापन समिति, लातुर
2. लातुर जिला गॅजेटियर 'भूकम्प'
3. A Short Note of Eorthquake Rehabilitation Programme in Latur Dist. (MEERP) (As on 31.08.2004)
4. 'भूकम्पायन' दै. लोकमत, विशेषांक 1996
5. International Recovery Platform, Latur Eorthquake 1993
6. Maharashtra Eorthquake Emergency Rehabilitation Program 'The Disaster'
7. Financial Management System's
8. http://www.jstor.orgEconomic $ Political weekly
9. Eorthquake Terminology htm
10. समाचार पत्र

दै. लोकमत, 31 मई 2010

दै. लोकमत ''सिंहावलोकन'', 24 जून, 2010

दै. संघर्ष, 7 जून, 2010

शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN